★★★★ भविष्य भवन ★★★★

•• मैं ऑफिस में व्यस्त था और कल के लिए राशि लिखना चाहता था । जब वो आदमी आया । वो पचास के पेटे में पहुंचा हुआ तजुर्बेकार आदमी लगता था । हलाकि ये मुझे बाद में पता चला कि वो बावन वर्ष का था ।

लोग अक्सर मेरे ऑफिस में आते थे और अपना भविष्य जानना चाहते थे । क्योंकि मैं ज्योतिषी था और नगर के व्यस्ततम इलाके में मेरा ऑफिस था ।

लोगों का आना-जाना लगा रहता था । लेकिन उस वक्त मेरा दिल चाह रहा था की मेरे राशि लिख लेने तक कोई ना आये, कल के अखबार में राशि ने छपना था और मेरे पास समय कम था । पिछले दो दिन से किसी अपने की शादी में व्यस्त होने से राशि समय पर लिख नहीं पाया था । मैं कंप्यूटर से सामने था, की-बोर्ड पर मेरी उंगलियाँ फुर्ती से इधर-उधर नाच रही थी और पेज-मेकर के फॉर्मेट पर तीव्रता से शब्द उभर रहे थे । मुझे लिखने की जल्दी थी और मैं लिख ही रहा था की वो आन पहुंचा था ।

- मुझे अपनी उम्र जाननी है । मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठते-बैठते वो ऐसे बोला मानो मेरे सर पे हथौड़ा दे मारा हो ।

लोग अक्सर मेरे ऑफिस में आकर ऐसे उटपटांग सवाल करते रहते थे । इससे वो ये ज़ाहिर करते थे कि - भई, मुझे तो ज्योतिष पर विश्वास नहीं है । तुम कुछ बताओ और मुझे विश्वास दिलाने की कोशिश करो तो कुछ बात बने ।

मुझे ऐसे लोगों की आदत थी और उनके लिये मेरे पास मेरा पेटेंट वाक्य था । "हाँ, बता दूंगा, 2100 फीस लगेगी" ।

उसने जेब से एक दो हज़ार का और एक सौ का नोट निकाला और मेरे सामने रखकर बोला -- "ठीक है , बताओ" ।

अब मुझे राशि लिखने का ख्याल छोड़ना पड़ा और उसकी तरफ तवज्जो देनी पड़ी ।

वो आदमी टांग पर टांग चढ़ा कर हाथ बांधे, चुनौतीपूर्ण दृष्टी से मुझे देख रहा था ।

मैंने उसके हाव-भाव का मुआयना किया । उसकी चुनौतीपूर्ण दृष्टी से मैंने अंदाज़ा लगाया कि वो मुझे झूठा साबित करना चाहता था ।

उसके हाथ बांधकर बैठने के अंदाज़ से मैंने अनुमान लगाया कि उसने हाथ बांधकर खुद को समेट लिया था, खुद को सुरक्षित कर लिया था और अब मैं चाहूँ भी तो उससे कोई सहयोग हासिल नहीं कर सकता था ।

टांग पर टांग चढ़ा कर उसके बैठने के अंदाज़ से मैंने अनुमान लगाया कि अपनी तरफ आने वाले सारे रास्ते उसने मेरे लिए बंद कर दिए थे ।

हम दोनों के बीच में रखी टेबल से वो दूर था अर्थात जाने-अनजाने भी वो हम दोनों के बीच रखी टेबल को छूना भी नहीं चाहता था । लेकिन इस तरफ से मैं टेबल को छु रहा था क्योंकि मेरी कोहनियां उस पर टिकी

BHAGYADISHA.COM

थी । शायद इसीलिये वो अपनी तरफ से टेबल को छूना नहीं चाहता था । कहीं इससे भी मैं उसके मन की बात भांप ना लूं ।

लेकिन इससे मैंने अनुमान लगाया कि मुझे तो वो किसी भी प्रकार का सहयोग हासिल नहीं करने देगा लेकिन वो अपनी तरफ से भी कोई सहयोग देने वाला नहीं था ।

बहरहाल मैंने पूछा - "कुंडली लाये हो" । उसने इंकार में सर हिला दिया । मैंने कहा - " ठीक है, डेट-टाइम बताओ" ।

उसने बताया और मैंने फुर्ती से कंप्यूटर पे कुंडली बनाई ।

कुम्भ लग्न और मिथुन राशि की उसकी कुंडली थी । लेकिन सबसे चौकाने वाली बात थी । वो थी उस कुंडली के दशम भाव में 'शनि-मंगल' की युति ।

शनि-मंगल की युति वाले लोग दूसरों पर वर्चस्व कायम करने वाले, बे-वजह का तर्क-वितर्क करने वाले, तुरंत वाद-विवाद उत्पन्न करने वाले, स्वयं की स्तुति करने वाले और प्रबल आलोचक होते हैं ।

मैंने ध्यान से इस युति का विश्लेषण किया। तो पाया कि मंगल, शनि से छह अंश आगे था और दोनों ग्रह युवा थे । अब वर्ष-कुंडली अनुसार ये परफेक्ट 'इत्थशाल' योग था ।

अर्थात इस इस शनि-मंगल युति का फल होना निश्चित था ।

मैंने कुंडली से दृष्टी हटाकर उसकी तरफ देखा । वो चेहरे पर क्रूर भाव लिये मुझे घूर रहा था ।

तुरंत ही मुझे अपने देवता याद आने लगे । मैंने सोचा - अगर ये आदमी मुझसे झगड़ा करने लगेगा तो मैं क्या करूंगा । मुझे लगा मैंने बिल्ली के धोखे में शेर की पूंछ पकड़ ली थी ।

मैंने उससे कुंडली की फीस ले ली थी और उसकी कुण्डली भी बना ली थी । अब इंकार का कोई सवाल ही नहीं था अब तो उसे सन्तुष्ट करना ही था । नहीं तो जैसी उसकी कुंडली थी उस हिसाब से तो वाद-विवाद होना तय था । मैं मन ही मन गायत्री जाप करने लगा ।

ये तो मैं समझ गया था कि उसके मन में श्रद्धा विश्वास जैसी कोई बात नहीं थी । वो मुझसे कुंडली तर्क-वितर्क करके ही पूछने वाला था ।

मैंने उससे बात करने का निश्चय किया और माहौल को हल्का करने के लिये उसकी कुंडली का विश्लेषण कर उससे कहा - "आपने अपने जीवन में संतान संबंधी सुख-दुःख बहुत देखे है" ।

उसने घूरकर मुझे देखा और क्रूर स्वर में बोला - "हाँ । मेरा सत्ताईस साल का जवान बेटा मर गया" ।

मैं हैरानी से उसकी शक्ल देखने लगा और वो फिर उसी स्वर में बोला - "और उसके लिये भी ज्योतिषियों ने कहा था कि - उसकी लंबी उम्र है" ।

मैंने जैसा सोचा था, सबकुछ वैसा ही हो रहा था । अर्थात वाद-विवाद की पृष्ठभूमि का निर्माण हो रहा था । वो शायद अपने बेटे की मौत का बदला मुझसे लेने आया था । पता नहीं किस ज्योतिषी ने उसके बेटे की गलत भविष्यवाणी की थी । जिसकी कीमत अब मुझे चुकानी थी ।

तभी वो फिर बोला - "अब मुझे अपनी उम्र जाननी है । आप बताएं मुझे कि मैं और कितने साल जीने वाला हूँ" ।

BHAGYADISHA.COM

मैंने मन ही मन सोचा - हे भगवान, ये क्यों अपनी उम्र जानना चाहता है ?
इसका उत्तर मुझे कुंडली से ही मिलना था । वो तो मुझे बताने वाला नहीं था । इसलिये मैंने फिर अपना ध्यान कुंडली पर केंद्रित किया ।
उस दिन सुबह नाश्ते में मेरी पत्नी ने रात के बचे हुये चावलों में उबले हुए आलू, बेसन और मसाले मिलाकर तली हुईं टिकिया बनाई थी ।
गर्मागर्म स्वादिष्ट टिकिया सामने आते ही मेरे मुँह में पानी आ गया और मैंने खूब पेट भरकर खायी थी । हालांकि रात का बचा हुआ और बांसी खाना नहीं खाना चाहिये ।
उसी दिन चन्द्रमा, राहु के नक्षत्र में और कुम्भ राशि में था । राहु के नक्षत्र वाले दिन व्यक्ति को रात का बचा हुआ खाना किसी फ़क़ीर यां किसी मांगने वाले को दे देना चाहिये । अगर ऐसा ना हो सके तो बहते पानी में बहा देना चाहिये । इससे राहु की कृपा बनी रहती है और व्यक्ति अड़चनों और उत्पातों से बच जाता है ।
लेकिन यहां तो रात का बचा हुआ खाना मैं खुद ही खाकर आया था और अब राहु मेरे पीछे पड़ा था ।
"सत्यानाश" । मैंने मन ही मन सोचा - मूर्खता की हद्द होती है" ।
ये बातें मुझे बाद में समझ आई कि मैं एकाग्रचित नहीं हो पा रहा था । शायद मेरा ध्यान अपने अख़बार की राशि लिखने में ज्यादा था । ये बात भी मुझे बाद में समझ आई कि अतिरिक्त कुंडली विश्लेषण की आवश्यकता ही क्या थी जबकि वो केवल अपनी उम्र जानना चाहता था और वो मैं बड़े आराम से उसे बता सकता था । लेकिन मैं कुंडली को और गेहराई से टटोलने का प्रयास कर रहा था - पता नहीं क्यों ?
शायद वो मेरी आदत हो गई थी कि - कोई कुंडली में कुछ भी पूछे लेकिन मैं सारी कुंडली को ही समझने का प्रयास करता रहता हूँ ।
फिर मैं उसकी कुंडली को ध्यान से देखने लगा ।
मैंने देखा - उसका चतुर्थ भाव, चतुर्थ भाव का स्वामी, चंद्र और बुध पाप ग्रहों से बहुत पीड़ित थे ।
इसका एक ही मतलब था कि - उस आदमी में कोई मानसिक नुक्स था ।
"हे भगवान्" । मैंने मन ही मन सोचा - क्या वो आदमी मानसिक रूप से विकृत था, क्या वो आदमी उन्मादी था यां वो आदमी पागल था ?
मैंने कुंडली से दृष्टी हटाकर उसकी तरफ देखा । उसकी पकोड़े जैसी अस्त-व्यस्त फूली हुई नाक देखकर मुझे विश्वास हो गया कि - उसका बुध निर्बल था और वो आदमी मानसिक विकृति लिये हुये था ।
मैंने अति आत्मविश्वास से भरकर उससे पूछा - " क्या आप कभी मनो-चिकित्सक के पास गए हैं ?
"क्यों ? वो खा जाने वाली नज़रों से मुझे देखता हुआ बोला - मैं क्या पागल हूँ ?
और मैं मूर्खों की तरह उसको देखने लगा ।
फिर वो चेतावनी भरे स्वर में बोला - "जो मैंने पूछा है, आप वो बताएं ।

BHAGYADISHA.COM

तब जाकर मुझे सुध आई । उसके सवाल का जवाब देने के बजाय ये मैं क्या कर रहा था । जो उसने पूछा था मैंने अब तक उसका जवाब उसको नहीं दिया था । और तो और अब तक उसका जवाब देने की मैंने सोची तक नहीं थी ।

फिर मैंने झटपट लग्नेश और अष्टमेश तथा चंद्र और शनि की राशियों को देखा और इस निर्णय पर पहुंचा कि - उसकी आयु-कक्षा, मध्यम थी अर्थात उसकी आयु 64 वर्ष के आसपास थी । फिर मैंने देखा कि - गुरु की लग्न पर दृष्टी थी, इससे आयु में और वृद्धि हो सकती थी । फिर मैंने सप्तछिद्र ग्रहों का विश्लेषण किया और प्रबल मारकेश को ढूंढ निकाला । इस प्रबल मारकेश की दशा उसके 71 वें वर्ष में आ रही थी । अर्थात 71 वर्ष उसकी आयु थी और वो आदमी उस समय बावन वर्ष का था । 19 वर्ष अभी और वो जीने वाला था ।

मैंने उसकी आँखों में देखा और पूर्ण आत्मविश्वास के साथ कहा - "सुनिये, आपकी आयु 71 वर्ष की है और आप 19 वर्ष अभी और जियेंगे ।

पहले तो कुछ नहीं हुआ, वो बस मुझे घूरता रहा लेकिन फिर उसका पागलपन सामने आया ।

उसकी आँखों में क्रोध उतर आया, उसकी साँसे जोर-जोर से चलने लगी और उसके होंठ फड़फड़ाने लगे ।

वो उछलकर कुर्सी से खड़ा हो गया और क्रोध से गुर्राकर बोला - "71 वर्ष मेरी आयु है, 19 वर्ष मैं और जियूँगा । अगर अभी जाकर मैं आत्महत्या कर लूं तो तेरी ज्योतिष का क्या होगा ?

मैं सहम गया, मुझे लगा वो मुझ पर झपट पड़ने को तैयार था ।

लेकिन वो दांत पीसता हुआ अपनी दो उँगलियाँ मुझे दिखाकर बोला - "दो बार आत्महत्या की कोशिश कर चूका हूँ । अपने ज्योतिष के भरोसे मत रहना, मैं अभी जाकर आत्महत्या कर लेने वाला हूँ और सुनो - कल तुम्हारे ज्योतिष का झूठ अखबार में छप जाएगा, TV पर दिखाया जायेगा" ।

अब मैं भी घबराकर उठ खड़ा हुआ और उसको देखने लगा । मैंने सोचा - ये पागल तो अपनीवाली पे आ गया था, पता नहीं आगे क्या करेगा ?

लेकिन अब वो चिल्लाने लगा और जोर-जोर से बोलने लगा - "प्लेन क्रैश में इतने लोग मरते है - क्या उन सबकी गणना करके रखते हो ? ट्रेन एक्सीडेंट में सैकड़ो लोग मरते हैं - उनकी कुंडली देखते हो ? बम ब्लास्ट में हज़ारो लोग मरते है - उनकी कुंडली किसने देखी है ? मेरे बेटे की कुंडली सौ ज्योतिषियों ने देखी, सबने कहा - लंबी उम्र है । फिर वो भरी जवानी में कैसे मर गया ?

तुम लोग झूठे हो, गलत हो, फरेबी हो ।

अभी वो और बोलने वाला था कि तभी एक सुन्दर सी युवती ने धड़धड़ाते हुए मेरे ऑफिस में प्रवेश किया और मेरी ओर देखे बिगैर ही उस आदमी से मुखातिब हो गई - "डैडी, डैडी आप कहाँ थे ? हम लोग सुबह से आपको तलाश कर रहे थे" ।

फिर उसी वक्त सफ़ेद कपडे पहने वार्ड बॉय जैसे दो लड़कों ने भी वहां प्रवेश किया और उस आदमी को खींचते हुए मेरे ऑफिस से बाहर ले गये ।

BHAGYADISHA.COM

वो लोग शायद उस आदमी की चीखो-चिल्लाहट सुनकर वहां आये थे । बहरहाल जाते-जाते उस युवती ने मेरी ओर हाथ हिलाया और बोली -"सॉरी" । मैं आवाक सा वहीँ खड़ा रह गया ।

उस दिन - मैं दिनभर आशंकित और आतंकित सा रहा ।

लेकिन दूसरे दिन वो युवती फिर आई और मेरे सामने वाली कुर्सी पर बैठती हुई बोली - "आपसे कुछ बात करनी थी" ।

लोग अक्सर ये बातें करते हैं कि - प्लेन क्रैश में, ट्रेन एक्सीडेंट में और बम ब्लास्ट में मरने वालों की कुंडली में एक साथ ही मरने वाले ग्रह कैसे बन गए थे । ज्योतिष पर उंगली उठाते हुये वो कहतें हैं - ऐसा कैसे हो सकता है ?

उस दिन वो पकौड़े जैसी नाक वाले ने भी ऐसे ही सवाल उठाये थे ।

बड़ा ही सीधा और आसान सा प्रकृति का सिद्धांत है - कि आप जिस पर निर्भर होंगे आपका भविष्य उसके भविष्य से जुड़ जाएगा ।

जैसे माँ के पेट में बच्चा - प्रसवकाल तक माँ पर निर्भर है । अब जैसा माँ के साथ होगा वैसा बच्चे के साथ होगा । अब अगर माँ के पेट में जुड़वाँ बच्चे हैं तो भी तो वो माँ पर ही निर्भर रहेंगे । इसमें संख्या की क्या बात है ।

ऐसे ही आप प्लेन में है, ट्रेन में है, तो आप उस पर निर्भर है । जब तक कि वो अपने गंतव्य तक ना पहुचें आपका भविष्य उसके भविष्य से जुड़ा है । जो उसके साथ होगा वो आपके साथ भी होगा । इसमें संख्या की कोई बात ही नहीं है । जितने भी लोग उसमे समाये है, सब उसपर निर्भर है जैसे माँ के पेट में बच्चा । इसलिये शास्त्र यात्रा के मुहूर्त की बात करते हैं और कहतें हैं कि - दिशाशूल में यात्रा ना करें, पीठ पीछे चंद्र हो ऐसी दिशा में यात्रा ना करें । ताकि यात्रा में कुछ अशुभ ना हो और सामूहिक मृत्यु ना हो ।

हर छोटी चीज अथवा जीव अपने से बड़े के साथ जुड़ा है । आपका शहर, आपका देश और ये पृथ्वी आपसे बड़े हैं । आपका भविष्य इनसे जुड़ा है । बम ब्लास्ट होगा तो आप प्रभावित होंगे ।

मैं इसी सोच में डूबा था कि वो आई ।

काली डेनिम की जीन और उसपर मोटे होजियरी के कपडे का कोहनियों तक बाँहों वाला, गोल गले का मैंगो कलर का टॉप पहने हुये थी ।

सीधी और लंबी लगभग साढ़े पांच फुट से निकलते कद की चुस्त और फुर्तीली चाल से वो मेरे ऑफिस में दाखिल हुई । मैंने अंदाज़ा लगाया वो मकर लग्न में पैदा हुई थी । क्योंकि मकर लग्न के लोग ही सीधे लंबे और फुर्तीले होते हैं ।

वो मेरे सामने आकर बैठी और बोली - "आपसे कुछ बात करनी थी" ।

मैंने उसकी तरफ देखा और खुद को गंभीर और बुद्धिमान व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया । मैंने ऐसा जाहिर किया कि - जैसे मैं कल की बात से खुश नहीं था । हालाकि उसका आना मुझे अच्छा लगा था क्योंकि वो राहत के दो शब्द बोलने आयी थी ।

BHAGYADISHA.COM

प्रत्यक्ष रूप से मैं माथे पर बल डालता हुआ गंभीर स्वर में बोला - " हाँ, बोलो" । वो मेरे रंग-ढंग से समझ गई कि मैं खुश नहीं था । इसलिये बोली - "मैं कल के लिये सॉरी बोलने आई हूँ । वो मेरे डैडी थे, जिन्होंने कल आपको बहुत परेशान किया । उनका नाम धीरेंद्र नाहर है और मैं निरमा नाहर हूँ" ।

वो एक पल के लिये मेरी प्रतिक्रिया देखने को रुकी । लेकिन मैं वैसा ही बना रहा तो वो आगे बोली - "दरअसल, वो बीमार है । छह महीने पहले मेरे ब्रदर की डैथ हो गई थी । तब से उनकी हालत ख़राब है और वो पागल जैसे हो गए हैं" ।

"तुम्हारे ब्रदर को क्या हुआ था ? मैंने पूछा ।

"थैलेसीमिया से उसकी डैथ हो गई थी । पिछले छह साल से उसको खून चढ़ाया जा रहा था और हर गुजरते दिन के साथ उसकी हालत ख़राब होती गई और अंत में उसकी मौत हो गई । मेरे डैडी को अपनी दोनों संतानों से यानी मुझसे और मेरे मृतक ब्रदर से बहुत लगाव था । पिछले छह सालों में एक बाप जो कुछ कर सकता है उससे कहीं ज्यादा मेरे डैडी ने मेरे ब्रदर के लिए किया था । इसी चक्कर में वो बहुत से ज्योतिषियों के पास भी गए थे । लगभग सभी ज्योतिषियों ने उन्हें आश्वासन दिया था कि मेरा ब्रदर बच जायेगा । लेकिन ऐसा हुआ नहीं, जिसकी वजह से उनको ज्योतिषियों से खुन्नस हो गई है" ।

वो फिर रुकी मुझे देखा और फिर बोलने लगी - "वो मेरे ब्रदर की मौत का सदमा सह नहीं पा रहे हैं । इस वजह से उन्होंने दो बार आत्महत्या की कोशिश भी की है । एक बार उन्होंने ऊँचे पूल से नदी में छलांग लगा ली थी । जहाँ से उनको मछुआरों ने बचा लिया था । दूसरी बार उन्होंने काक्रोच मारने की दवा पी ली थी । लेकिन समय रहते उन्हें हॉस्पिटल पहुंचा दिया गया और वो बच गये । अब उन्हें मेन्टल स्ट्रोक आते हैं और वो अजीब हरकतें करते हैं । इसलिये उन्हें अब कॅन्टीनुअली हॉस्पिटल में रखा जाता है । लेकिन वहां से भी वो भाग आते हैं और हम उनको यहाँ-वहां तलाश करते रहते है । कल भी ऐसा ही हुआ था" ।

थेलेसीमिया का नाम सुनते ही मेरे कान खड़े हो गये । मैं तुरंत ही चुस्त और चाक-चौबंद हो गया ।

पिछले दो साल से मैं थेलेसीमिया के पीछे पड़ा था और कई डॉक्टर्स से भी मिला था । डॉक्टर्स के अनुसार थेलेसीमिया अनुवांशिक बिमारी थी । जो माँ-बाप से बच्चों को मिलती है । माँ-बाप में से कोई एक अगर माइनर थेलेसीमिया है तो बच्चा माइनर थेलेसीमिया हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है । लेकिन माँ-बाप दोनों ही माइनर थेलेसीमिया है तो बच्चा मेजर थेलेसीमिया हो जायेगा । इसमें DNA के अंदर एक genetic-map होता है । जिसकी दो चैन्स होती है अल्फ़ा और बीटा । मेजर थेलेसिममिया में बीटा चैन आरम्भ से विकृत होती और एक समय पर जब उसे सक्रीय होना होता है - वो नही होती और विकास रुक जाता है अथवा रक्त बनना रुक जाता है । अल्फा चैन जन्म से ही सक्रीय रहती है और हार्मोन्स के बदलाव के समय बीटा चैन को भी एक्टिव होना होता - लेकिन नही होती । अल्फा चैन एक समय के बाद निष्क्रीय हो जाती है और बीटा चैन सक्रीय नही होती - बस, यहीं से इसका घातक रूप प्रकट होता है ।

अल्फ़ा चैन में से चौथी यां पाँचवी कड़ी विकृत हो जाये यां टूट जाये तो 'मेजर थेलेसीमिया' प्रकट होता है । जिससे नया खून बनने की प्रक्रिया धीरे-धीरे रुक जाती है । ऐसा किसी भी उम्र में हो सकता है । अर्थात

BHAGYADISHA.COM

genetic-map की चैन्स जितनी अधिक विकृत अथवा टूटी हुई होगी नया खून बनने की प्रक्रिया उतनी जल्दी रुक जायेगी ।

कुंडली से इसको बताना आसान काम नहीं है । इसके लिये ज्योतिष का कई वर्षों का अनुभव और साथ-साथ में medical science की जानकारी भी आवश्यक होनी होती है । ये एक genetic fault है - जिसे ठीक करना ज्योतिषी के बस की बात नही है । माँ-बाप की कुण्डलियों में नाड़ी-दोष इसका एक मुख्य कारण हो सकता है - जो द्विपाद नक्षत्रों में जन्म लेने से प्रकट होता है ।

आज का इन्सान बहुत आधुनिक होने की दिशा में अग्रसर है । फिर भी - वो सदा से काल, कर्म, स्वभाव और अपने गुण से बंधा है ।

लेकिन - कभी जब वो अफ्रीका से चलकर ईरान पहुंचा था तो सभ्य बनना चाहता था । साइबेरिया से भी चलकर वो अजनाभवर्ष तक आया था और उसने जम्बूद्वीप बसाया था । तब भी वो समाज बनाकर सभ्यता को स्थापित करना चाहता था । तब हिमालय पर्वत भी नही हुआ करता था । लेकिन - प्रकृति ने सदा से उसकी परीक्षा ली है और अपने रहस्यों को समझने का उसे न्यौता दिया है । जैसे-जैसे इन्सान ने परत दर परत प्रकृति को समझा है उसने अपनी संस्कृति का निर्माण किया है । इसमें निरन्तर सुधार करता रहा है । कभी - जो अभिशाप हुआ करते थे - आज हमने उन्हें बीमारियों के नाम से जान लिया है । कभी - जो भूत-प्रेत की ऊपरी हवायें हुआ करती थी - आज हम उसे मनो-विज्ञान के नाम से जानते है । इन्सानी शरीर की जटिलताओं से भी कश्मकश चल रही है और उसके रहस्य भी खोले जा रहे हैं ।

करीब 1341 ईस्वी पूर्व मिस्र में तुतन खामन नाम का एक राजा हुआ करता था जो 19 वर्ष की छोटी सी उम्र में मृत्यु को प्राप्त हो गया था ।

1922 में होवार्ड कार्टर नाम के एक आदमी ने उसकी कब्र ढूंढ निकाली । तब पता चला कि उसकी लाश को मसालों से ढककर ममी बनाकर रखा गया था । अब उसपर शोध चल रहा है । उसकी हड्डियों में सुख गये bone-marrow को इंजेक्शन से निकाला गया और उसका DNA टेस्ट किया गया ।

तुतन-खामन के genetic-map में विकृति पायी गयी और उसी वजह से उसकी मौत भी हुई थी । हालाकि जब उसकी मौत हुई तब उसकी एक टांग भी टूटी हुई थी और उसे मलेरिया भी था । लेकिन शोध और हुआ है ।

उसका इतिहास खोजा गया तो पता चला कि - तुतन-खामन के पिता आखेनातेन ने अपनी बहिन से शादी की थी ।

आमेनहोतेप तृतीय, आखेनातेन का पिता था और तिये नामक स्त्री आखेनातेन की माँ थी ।

जब तुतन-खामन राजा बना तो उसने अपनी सौतेली बहिन अंखसेनामुन से शादी की थी ।

उनके परिवार में चली आ रही अनुवांशिक विकृतियों के कारण तुतन-खामन की पत्नी दो बार गर्भवती हुई और दोनों बार उसका बच्चा गर्भ में ही मर गया था । हालांकि उन दोनों गर्भस्थ मृत शिशुओं की भी ममी बनाई गई थी जोकि तुतन-खामन की ममी के साथ ही मिली थी । बाद में 19 वर्ष की आयु में तुतन-खामन की भी मृत्यु हो गई । उस युग में इसको अभिशाप माना गया और इसका कारण तुतन-खामन की पत्नी

BHAGYADISHA.COM

अंखसेनामुन को माना गया । लेकिन आज शोध के बाद पता चला की वो सब मौतें अनुवांशिक विकृतियों के कारण हुई थी । लेकिन बाद में अंखसेनामुन ने इसको ताड़ लिया था और दूरस्थ पड़ौसी राजा से विवाह करके इसको रोका था ।

बहरहाल ये तो एक उदाहरण है,

ये विकृतियां तो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है । medical science ने जो खोजा है वो तो खुद ही प्रकट हुआ है और अब उसके उपाय किये जा रहें हैं । क्योंकि - जब तक बीमारी दिखी नही, तब तक चिकित्सा-विज्ञान ने उसका उपाय नही खोजा और जब तक विकृति नही प्रकट हुई - तब तक चिकित्सा-विज्ञान ने प्रयास नही किये ।

लेकिन - क्या थेलेसीमिया एक ही विकृति है जो अनुवांशिक है ? Genetic-map तो बहुत रहस्यमय और अनंत है । उसको पूर्णरूपेण देखना और समझना अभी बाकि है । पता नहीं। कौनसी बीमारियाँ अब भी अनुवांशिक विकृति के रूप में लोग भुगत रहे हैं और हमने अभी तक उसे पहचाना भी नहीं है ।

जो भी हो - भारतीय-संस्कृति, भारतीय-शास्त्र कथन, भारतीय-पद्धति और भारतीय-दर्शन - इन्सानी जीवन के लिये सदा से सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुये हैं ।

विष्णु-पुराण में कहा है - सप्तमी पितृपक्षाच्च् मातृपक्षाच्च् पंचमीम ।
उद्वहेत् द्विजो भार्या न्यायेन् विधिना नृप ।।

पिता-पक्ष में सात पिढ़ीयों तक विवाह सम्बन्ध नहीं होने चाहिये और माता-पक्ष में पांच पिढ़ीयों तक ये सम्बन्ध नहीं होने चाहिये ।

इसके अलावा भी शास्त्र कहते हैं - चाचा की साली, सौतेली माँ की बहिन, चाची की बेटी, सौतेली मौसी की बेटी, सगे भाई की साली, सगी मौसी और अपने गुरु की बेटी से विवाह नहीं करना चाहिये । ऐसे विवाह आने वाली पीढ़ियों के लिये अनुवांशिक विकृति पैदा करते हैं ।

इन सबसे ऊपर ज्योतिष शास्त्र भी -नाड़ी-दोष- में विवाह ना करने की चेतावनी देता है ।

आज का इन्सान बहुत आधुनिक होने की दिशा में अग्रसर है । फिर भी - वो सदा से काल, कर्म, स्वभाव और अपने गुण से बंधा है ।

लेकिन - कभी जब वो अफ्रीका से चलकर ईरान पहुंचा था तो सभ्य बनना चाहता था । साइबेरिया से भी चलकर वो अजनाभवर्ष तक आया था और उसने जम्बूद्वीप बसाया था । तब भी वो समाज बनाकर सभ्यता को स्थापित करना चाहता था । तब हिमालय पर्वत भी नही हुआ करता था । लेकिन - प्रकृति ने सदा से उसकी परीक्षा ली है और अपने रहस्यों को समझने का उसे न्यौता दिया है । जैसे-जैसे इन्सान ने परत दर परत प्रकृति को समझा है उसने अपनी संस्कृति का निर्माण किया है । इसमे निरन्तर सुधार करता रहा है । कभी - जो अभिशाप हुआ करते थे - आज हमने उन्हें बीमारियों के नाम से जान लिया है । कभी - जो भूत-प्रेत की ऊपरी हवायें हुआ करती थी - आज हम उसे मनो-विज्ञान के नाम से जानते है । इन्सानी शरीर की जटिलताओं से भी कश्मकश चल रही है और उसके रहस्य भी खोले जा रहे हैं ।

BHAGYADISHA.COM

करीब 1341 ईस्वी पूर्व मिस्र में तुतन खामन नाम का एक राजा हुआ करता था जो 19 वर्ष की छोटी सी उम्र में मृत्यु को प्राप्त हो गया था ।

1922 में होवार्ड कार्टर नाम के एक आदमी ने उसकी कब्र ढूंढ निकाली । तब पता चला कि उसकी लाश को मसालों से ढककर ममी बनाकर रखा गया था । अब उसपर शोध चल रहा है । उसकी हड्डियों में सुख गये bone-marrow को इंजेक्शन से निकाला गया और उसका DNA टेस्ट किया गया ।

तुतन-खामन के genetic-map में विकृति पायी गयी और उसी वजह से उसकी मौत भी हुई थी । हालाकि जब उसकी मौत हुई तब उसकी एक टांग भी टूटी हुई थी और उसे मलेरिया भी था । लेकिन शोध और हुआ है ।

उसका इतिहास खोजा गया तो पता चला कि - तुतन-खामन के पिता आखेनातेन ने अपनी बहिन से शादी की थी ।

आमेनहोतेप तृतीय, आखेनातेन का पिता था और तिये नामक स्त्री आखेनातेन की माँ थी ।

जब तुतन-खामन राजा बना तो उसने अपनी सौतेली बहिन अंखसेनामुन से शादी की थी ।

उनके परिवार में चली आ रही अनुवांशिक विकृतियों के कारण तुतन-खामन की पत्नी दो बार गर्भवती हुई और दोनों बार उसका बच्चा गर्भ में ही मर गया था । हालांकि उन दोनों गर्भस्थ मृत शिशुओं की भी ममी बनाई गई थी जोकि तुतन-खामन की ममी के साथ ही मिली थी । बाद में 19 वर्ष की आयु में तुतन-खामन की भी मृत्यु हो गई । उस युग में इसको अभिशाप माना गया और इसका कारण तुतन-खामन की पत्नी अंखसेनामुन को माना गया । लेकिन आज शोध के बाद पता चला की वो सब मौतें अनुवांशिक विकृतियों के कारण हुई थी । लेकिन बाद में अंखसेनामुन ने इसको ताड़ लिया था और दूरस्थ पड़ौसी राजा से विवाह करके इसको रोका था ।

बहरहाल ये तो एक उदाहरण है,

ये विकृतियां तो पीढ़ी दर पीढ़ी चलती रहती है । medical science ने जो खोजा है वो तो खुद ही प्रकट हुआ है और अब उसके उपाय किये जा रहें हैं । क्योंकि - जब तक बीमारी दिखी नही, तब तक चिकित्सा-विज्ञान ने उसका उपाय नही खोजा और जब तक विकृति नही प्रकट हुई - तब तक चिकित्सा-विज्ञान ने प्रयास नही किये ।

लेकिन - क्या थेलेसीमिया एक ही विकृति है जो अनुवांशिक है ? Genetic-map तो बहुत रहस्यमय और अनंत है । उसको पूर्णरूपेण देखना और समझना अभी बाकि है । पता नहीं। कौनसी बीमारियाँ अब भी अनुवांशिक विकृति के रूप में लोग भुगत रहे हैं और हमने अभी तक उसे पहचाना भी नहीं है ।

जो भी हो - भारतीय-संस्कृति, भारतीय-शास्त्र कथन, भारतीय-पद्धति और भारतीय-दर्शन - इन्सानी जीवन के लिये सदा से सर्वश्रेष्ठ सिद्ध हुये हैं ।

विष्णु-पुराण में कहा है - सप्तमी पितृपक्षाच्च् मातृपक्षाच्च् पंचमीम ।

उद्वहेत् द्विजो भार्या न्यायेन् विधिना नृप ।।

BHAGYADISHA.COM

पिता-पक्ष में सात पिढ़ीयों तक विवाह सम्बन्ध नहीं होने चाहिये और माता-पक्ष में पांच पिढ़ीयों तक ये सम्बन्ध नहीं होने चाहिये ।

इसके अलावा भी शास्त्र कहते हैं - चाचा की साली, सौतेली माँ की बहिन, चाची की बेटी, सौतेली मौसी की बेटी, सगे भाई की साली, सगी मौसी और अपने गुरु की बेटी से विवाह नहीं करना चाहिये । ऐसे विवाह आने वाली पीढ़ियों के लिये अनुवांशिक विकृति पैदा करते हैं ।

इन सबसे ऊपर ज्योतिष शास्त्र भी -नाड़ी-दोष- में विवाह ना करने की चेतावनी देता है ।

मैंने उसकी तरफ देखा और उसके अंगप्रत्यंग का ज्योतिषीय निरिक्षण किया ।

उसका लंबा कद, उसकी चुस्त चाल, फुर्ती और रवानगी तो मैं पहले ही देख चुका था । उसमे भरपूर ऊर्जा थी और जबसे आई थी तबसे तरोताज़ा ही दिख रही थी । व्यक्तितत्व में ऐसी विभिन्नता तभी प्रकट होती है जब लग्न पर कई ग्रहों की दृष्टी हो ।

उसके तीखे नैन-नक्श और चमकीली त्वचा बताती थी कि उसका शुक्र बलवान होना चाहिये ।

शुक्र बलवान हो तो व्यक्ति को फिल्मों में काम मिलने की आशा रहती है ।

उसके माथे पर कभी-कभी जब बल पड़ते थे तो वहां तीन लकीरें बन जाती थी जो एक सिरे से दूसरे सिरे तक फ़ैल जाती थी । उसकी आँखे आशा और विश्वास से भरी हुई थी । जो दर्शाता था कि वो भविष्य के प्रति आश्वस्त थी । ये संकेत था कि उसका सूर्य भी बलवान था ।

मैंने मन ही मन सोचा - "देवी-जी, तुम हीरोइन नहीं बनोगी तो और कौन बनेगा" ।

"क्या ज्योतिषी बीमारियों के इलाज़ बता सकते हैं ? अचानक उसने मुझसे पूछा ।

"हाँ" - मैंने सहजता से कहा - "क्यों नहीं" ।

"फिर मेरे भैया के लिये इतने ज्योतिषियों ने इलाज़ बताये, लेकिन कोई फ़ायदा क्यों नहीं हुआ ? वो दुखभरे स्वर में बोली ।

"तुमको पता है ? मैं बोला - "जब हम डॉक्टर के पास जाते हैं तो अक्सर डॉक्टर हमको प्राथमिक उपचार के तौर पर पैन किलर अथवा एंटीबायोटिक का डोज़ देते हैं" ।

वो ध्यान से मेरी ओर देख रही थी । मैं आगे बोला - "ऐसे ही जब हम ज्योतिषी के पास जाते हैं तो अक्सर ज्योतिषी प्राथमिक उपचार के तौर पर पूजा-पाठ, उपाय अथवा रत्न पहनने का सुझाव देते हैं" ।

"हाँ" । वो झट से बोली - ओके, लेकिन अगर एंटीबायोटिक और पेनकिलर काम ना करें तो हम स्पेशलिस्ट के पास जाते हैं । तो क्या ज्योतिषियों में भी स्पेशलिस्ट होते हैं ?

"हाँ, होते हैं" । मैं गंभीरता से बोला - "लेकिन लोग ऐसा सोचना नहीं चाहते और स्पेशलिस्ट ज्योतिषी को ढूँढना नहीं चाहते । उनके हिसाब से किसी भी ज्योतिषी को भगवान् का अवतार होना चाहिये जो पलक झपकते ही सब ठीक कर दे । लोग डॉक्टर को तो किसी गलती के लिये माफ़ कर सकते हैं लेकिन ज्योतिषी को माफ़ नहीं करना चाहते" ।

मैं और बोला - "लेकिन आने वाले समय में विभिन्न स्पेशलिस्ट ज्योतिषी भी होंगे और उनकी स्पेशलाइजेशन सर्वमान्य भी होगी" ।

BHAGYADISHA.COM

वो ध्यान से मेरी बात सुन रही थी इसलिये मैं फिर बोला - "तुम्हारे भाई का केस तो ला-इलाज़ था । उसे अनुवांशिक विकृति थी जो कोई भी डॉक्टर और ज्योतिषी ठीक नहीं कर सकता था" ।
उसकी आँखों से आंसू बह निकले ।
रोते-रोते वो सुबकने लगी, अब मुझे उसे चुप कराना था और यही मैं नहीं कर पाता था । मैंने सोचा - एक गिलास पानी दिया जाये और अब मुझे उठना था और ऑफिस के बाहरी हिस्से में रखे वाटर-फ़िल्टर से उसे पानी देना था । ऑफिस की देखभाल करने वाला मेरा सहायक रामपाल छुट्टी पर था । उसकी माँ बीमार थी और वो भी up के एक गांव में, अभी दो दिन उसे नहीं आना था । अगर वो होता तो मैंने उसे ही आवाज देनी थी । बहरहाल अभी मैं ये सोच ही रहा था कि द्वार पर मेरा शिष्य अवि प्रकट हुआ ।
अवि 20 वर्ष का नौजवान था और मेरे पास ज्योतिष सीखता था । वो मेरे रिश्तेदारी में था और ज्योतिष सीखने की ज़िद पकडे बैठा था । मैंने उसकी कुंडली देखी थी और पाया था कि - कुंडली में कर्म-कारक उपकरणों पर गुरु का प्रभाव ज्यादा था । जबकि ज्योतिष-कारक बुध निर्बल भी था और उसका कर्म-कारक उपकरणों से सम्बन्ध भी नहीं बन रहा था । मैंने उसे कर्मकाण्ड में मन लगाने को कहा था परंतु वो ज़िद पकडे बैठा था कि ज्योतिष ही सीखेगा । मुझे लगता था कि - वो मेरे लोकल tv पर राशिफल बताने से और अखबारों में मेरे लेख छपने से बनी मेरी लोकप्रियता से प्रभावित था और मेरे जैसा बनना चाहता था । जबकि मैं जानता था कि ज्योतिष में उसका भविष्य नहीं था । बहरहाल रिश्तेदारी का दबाव और अवि की ज़िद के आगे मुझे झुकना पड़ा और उसे ज्योतिष सीखाना आरम्भ करना पड़ा । दिन में दो घंटे वो मेरे पास आता था । बाकी समय में वो कर्मकाण्ड भी सीखता था और पढाई भी पूरी कर रहा था । उसका पूरा नाम अविनाश गौतम था लेकिन मैं उसे अवि ही कहता था । उस समय उसके आने से मैं बहुत खुश हुआ ।
वो जगह बनाता हुआ अंदर तक आया इसके लिये सुबकती हुई निरमा को भी उसके लिये जगह बनानी पड़ी । बहरहाल वो अंदर मुझ तक आया और मेरे पैर छुए । ऐसा वो प्रतिदिन करता था लेकिन उस दिन उसका पूरा ध्यान रोती हुई निरमा पर लगा हुआ था । "अवि" । मैं निरमा की और इशारा करता हुआ बोला - "एक गिलास पानी ले आओ" ।
वो अचरज से निरमा को देखता हुआ वैसे ही जगह बनाता हुआ बाहर की तरफ बढ़ा जैसे वो अंदर आया था । ऐसा उसे इसलिये करना पड़ रहा था क्योंकि मेरे ऑफिस में ज्यादा जगह नहीं थी ।
बहरहाल उसने निरमा को पानी दिया, जिसे सुबकती निरमा ने पिया और स्वयं को संभाला । रोने की वजह से उसकी आँखों में लाल डोरे उभर आये थे जिससे वो और सुन्दर लग रही थी । अवि बाहर बैठ गया था, बाहर अर्थात मेरे बैठने वाले ऑफिस के अलावा एक बाहरी कमरा जिससे जुड़ा ऑफिस का मेन-गेट था ।
"भैय्या की मौत की हम लोगों को उम्मीद नहीं थी" । वो धीरे से बोली - "ऐसा हमने सोचा ही नहीं था" ।
फिर जैसे उसे कुछ याद आया हो, इस अंदाज़ में उसने मुझसे पूछा - "डैडी ने कल आपको, आपकी फीस दी थी ?
"हाँ" । मैं रुआंसे स्वर में बोला - "आते ही पहले मेरी फीस दी थी और बाद में मेरी खबर ली थी" ।
वो धीरे से हँस पड़ी और बोली - "सॉरी" ।

BHAGYADISHA.COM

माहौल फिर हल्का हो गया और हम दोनों फिर बातचीत के मूड में आ गये ।
"भैया की मौत के आखरी दिनों में डैडी बहुत से ज्योतिषियों से मिलते थे । जिनमे से कई हमारे घर तक भी आये थे और हमने उनके सुझाव पर 'महामृत्युंजय' जप भी करवाया था" ।
वो सोचपूर्ण स्वर में बोल रही थी । - इसके अलावा भी कितने ही पूजा-पाठ और धार्मिक कर्म-काण्ड डैडी ने करवाये । लेकिन हम नहीं जानते थे कि - वो सब क्या हो रहा है और उससे क्या होगा । डैडी शायद जानते हो । जैसे डॉक्टर्स ने ये कह दिया था कि - भैया के शरीर में खून बनना बंद हो चूका था इसलिये उन्हें निरंतर खून चढ़ाया जाना जरूरी है । जब तक शरीर इस बाहरी खून को स्वीकार करेगा तब तक हम खून चढ़ाते रहेंगे । उसके बाद हमारे हाथ में कुछ नहीं । इससे हमको ये अंदाज़ा था कि - डॉक्टर्स जो कर सकते हैं कर रहें है और उन्हौने अपनी लिमिट बता दी थी । लेकिन पंडित लोग जो पूजा-पाठ करते थे उसका हमको कुछ पता नहीं होता था । वो क्यों कर रहे है ? उससे क्या होगा ? भैया की बीमारी को वो कैसे समझ रहें है ? उनके पूजा-पाठ करने से भैया को कैसे फ़ायदा होगा ? हम कभी समझ नहीं सके । वो कहते थे कि - चिंता मत करो, सब ठीक हो जायेगा । लेकिन कुछ ठीक नहीं हुआ, बल्कि भैया की मौत ही हो गई" ।
वो चुप हुई तो मैंने गंभीरता से कहा - "बात फिर वही है कि - आप लोगों ने साधारण ज्योतिषियों से संपर्क किया था । हलाकि ऐसे समय पर यही सब किया जाता है, 'महामृत्युंजय' पूजा-पाठ इत्यादि । लेकिन अगर आप किसी विशेषज्ञ ज्योतिषी से संपर्क करते तो वो आप लोगों को बताता कि - वो सब आवश्यक था यां नहीं । लेकिन आप लोग भी क्या करें, इस विषय में आपको अधिक जानकारी ही नहीं होगी । आप लोग मेडिकल साइंस के विषय में तो खूब जानते हैं लेकिन अपनी ही 'भारतीय-संस्कृति' के विषय में कुछ नहीं जानते" ।
उसने एक पल के लिये मुझे देखा, फिर चुनौतीपूर्ण स्वर में बोली - "अगर आप वहां होते तो क्या करते ?
वो जितनी सुन्दर थी उतनी भोली-भाली नहीं थी । जाहिर है जिसका शुक्र बलवान होगा वो भोला-भाला कैसे हो सकता था । दैत्य-गुरु, शुक्र उन दैत्यों के गुरु थे जो भीषण तपस्या इसलिये करते थे ताकि 'वर' मांग सके । व्यवहारिकता बलवान शुक्र का फल था ।
फ़िल्म-इंडस्ट्री भी शुक्र का क्षेत्र थी और वहां भी व्यवहारिकता का खूब बोल-बाला था । ये लड़की फ़िल्म-इंडस्ट्री के लिये ही बनी थी । मैंने सोचा - ये लड़की जरूर हीरोइन बनेगी । फ़िलहाल तो उसने मुझे चुनौती दे रखी थी कि - आप वहां होते तो क्या करते ।
बहरहाल मैंने उसे बताया की - "अगर मैं वहां होता, तो मैं तुम्हारे भाई की कुंडली का बारीकी से विश्लेषण करता । मैं देखता कि - बीमारी कब शुरू हुई, मैं देखता कि - कुंडली में बीमारी के समय 'रोग-कारक' दशा चल रही थी कि नहीं । बीमारी किस प्रकार की है - मैं समझने का प्रयास करता । मैं ग्रहों का बारीकी से विश्लेषण करता । लेकिन जानता हूँ कि - मुझे कुंडली से कुछ नहीं मिलना था । क्योंकि वो अनुवांशिक विकृति थी और कुंडली से उसका पता लगाना बहुत मुश्किल था । क्योंकि शास्त्रों अथवा ग्रंथों में अनुवांशिक विकृति का अधिक उल्लेख नहीं है । ऐसे में कोई भी साधारण ज्योतिषी विभिन्न प्रकार के प्राथमिक उपचार अर्थात पूजा-पाठ और रत्न पहनने का सुझाव तो देता ही देता । लेकिन मैं ऐसा नहीं करता । जब तक मैं

BHAGYADISHA.COM

कुंडली का स्वभाव समझ ना लूं, मैं उपचार आरम्भ नहीं करता । मैं भरसक प्रयास करता कि मैं बीमारी और कुंडली का तालमेल समझ पाऊं । लेकिन फिर जैसे ही मुझे डॉक्टर्स से ये पता चलता कि - वो थैलेसीमिया की बीमारी थी, मैं तुरंत समझ जाता कि - ये नाड़ी-दोष था और मैं तुम्हारे माँ-बाप की कुंडली का विश्लेषण करता और मेरा पूर्ण विश्वास है कि - उस विश्लेषण में मुझे तुम्हारे भाई की बीमारी और कुंडली का तालमेल मिल जाता ।

ऐसी बहुत सी कुण्डलियाँ मैंने देखी थी जिनमे अनुवांशिक विकृतियां तो थी लेकिन विश्लेषण में नहीं आती थी । इसका एक प्रबल कारण ये था कि - हम ये सोचकर विश्लेषण करते ही नहीं हैं कि - हम अनुवांशिक विकृति ढूंढ रहे हैं । हम तो साधारण रूप में रोग और रोगकारक कारणों को तलाश करते हैं । जबकि इससे हटकर अनुवांशिक विकृति 'साइलेंट डेस्ट्रॉयर' की तरह शरीर के अंदर मौजूद रहती है और साधारण विश्लेषण में पकड़ में नहीं आती ।

जब डॉक्टर्स की तरफ से ये बताया गया था कि - वो थैलेसीमिया था तो ये मेरे लिये भी संकेत था कि - वो प्रबल नाड़ी-दोष था । जिसका उपाय ज्योतिष में भी नहीं था । ये बात मैं तुम्हारे माँ-बाप को बता देता । लेकिन मैं 'महामृत्युंजय' जप का सुझाव तब भी देता । क्योंकि जीवन-रक्षा के उपाय अंतिम समय तक करते रहना किसी भी ज्योतिषी का धर्म है" ।

"उससे क्या होता ? निरमा ने पूछा ।

"किससे ? मैं उसका प्रश्न ही नहीं समझ पाया ।

"महामृत्युंजय जप से" ।

"ओह" । मैंने उसका आशय समझ लिया और बोला - "महामृत्युंजय मंत्र में शरीर के आयुकारक तत्वों को पुष्ट करने की शक्ति होती है । इसके निरंतर जाप से व्यक्ति की आयु बढ़ती है" ।

"हाँ" । वो उलझनपूर्ण स्वर में बोली - "लेकिन मंत्र आप पढ़ते और आयु मेरे भाई की बढ़ती । कैसे ?

मैं समझ गया कि - उसे अपनी संस्कृति की ज़रा भी जानकारी नहीं थी । वो बिल्कुल भी धार्मिक प्रभाव में नहीं थी । मैंने सोचा - दैत्य-गुरु, शुक्र के बलवान होने का एक प्रभाव ये भी हो सकता है ।

बहरहाल मैंने उससे पूछा - "सौंग्स सुनने का शौक है ?

"हाँ" । वो आत्मविभोर होकर बोली - "आई लव सौंग्स" ।

"सैड सौंग्स से सैंटी हो जाती हो ?

"हाँ"

"हैप्पी सौंग्स से हैप्पी हो जाती हो ?

"हाँ"

"डाँसिंग सौंग्स से डांस करने का मन करता है ?

"हाँ"

"क्यों ? मैंने अचानक पूछा ।

BHAGYADISHA.COM

"आं" । उसके मुँह से निकला और वो उलझनपूर्ण दृष्टी से मुझे देखने लगी । एक पल के लिये वो अचकचा गई थी ।

लेकिन फिर उसकी आँखे चौड़ी हो गई और वो आश्चर्य भरे स्वर में बोली - "ओह, माय गॉड । ऐसे तो मैंने सोचा ही नहीं । आपके कहने का मतलब है जैसे सौंग्स हमपर असर डालते हैं, वैसे ही मंत्र भी हमपर असर डालते हैं ?

"उससे भी कहीं ज्यादा" । मैंने कहा ।

वो आश्चर्य में थी और उसको देखकर मैं प्रसन्न हो रहा था कि - मैं उसकी व्यवहारिकता को भेदने में सफल हो गया था । मैंने मन ही मन खुद को शाबाशी दी और खुद से ही कहा - पंडित-जी, आपका जवाब नहीं ।

मैंने उसे आगे बताया - "हमारे ऋषि-मुनियों ने विशेष शब्दों को आपस में जोड़कर मंत्रो का निर्माण किया है । इनके उच्चारण से शरीर में विशेष नाड़ियाँ, कोशिकाएं, भावों इत्यादि में कंपन पैदा होता है और ये जाग्रत होकर शरीर में शक्ति भरते हैं । जिससे रोग निरोधक शक्ति बलवान होती है और व्यक्ति की आयु बढ़ती है । महामृत्युंजय मंत्र की यही विशेषता है । इसके अलावा भी बहुत से मंत्र हैं और अलग-अलग नाड़ियों, कोशिकाओं और भावों को जाग्रत करने का कार्य करते हैं और विभिन्न लाभ प्रदान करते हैं" ।

- हाँ" । वो सोचपूर्ण स्वर में बोली - "ये तो है, अगर सौंग्स असर डालते हैं तो मंत्र भी डालेंगे" ।

मैंने कई बार ऐसा पढ़ा है, ब्राह्मणों से मिलकर, ज्योतिषियों से संवाद करके, योगियों के अनुभव जानकार और स्वयं भी कुछ प्रयास करके कि - योगी जब 'कुण्डलिनी' जाग्रत करते हैं तो 'मूलाधार' से चक्रों का भेदन करती हुई वो ऊपर 'आज्ञा-चक्र' की ओर बढ़ती है । योगी उसे 'आज्ञा-चक्र' में विश्राम करवाते हैं । लेकिन उससे पहले आज्ञा-चक्र में स्थित 'चंद्र-घट' को वो उलट देती है । इसी 'चन्द्र-घट' में अमृत होता है जो उलट जाने से शरीर में समा जाता है और योगी नवयौवन प्राप्त कर लेता है ।

अब ऐसा सुना है कि - शरीर को स्वस्थ रखने वाले न्यूरॉन्स, पिनियल ग्लैंड से सप्लाई होते हैं । पिनियल ग्लैंड अर्थात आज्ञा-चक्र । पिनियल ग्लैंड से अधिक से अधिक न्यूरॉन्स कैसे निकले, विज्ञान इस खोज में है ताकि इंसान को स्वस्थ रखा जा सके । लेकिन बात बनती नहीं है ।

ऐसा माना जाता है कि - जितने अधिक न्यूरॉन्स पीनियल ग्लैंड से निकलते हैं उतना ही शरीर स्वस्थ रहता है । लेकिन ये शरीर में सिमित रेखा तक ही निकलते है और संख्यानुसार अपना काम करते हैं ।

विज्ञान के पास इनको बढ़ाने का कोई तरीका नहीं है । अगर ये बढ़ते हैं तो व्यक्ति स्वस्थ होता है । विज्ञान के पास कुछ है भी तो ऐलोपैथी की दवायें, जो एक चीज ठीक करती है तो दूसरी समस्या पैदा कर देती है । लेकिन प्राणायाम करने से, ध्यान करने से और चित को एकाग्र करने से ये बढ़ते हैं ।

नियम पालन करने से, पूजा-पाठ करने से, मंदिर में जाने से, मंत्र सुनने से और मंत्रोउच्चारण करने से चित शांत होता है और शांत चित एकाग्र हो जाता है । जिससे न्यूरॉन्स की संख्या बढ़ती है और रोग-प्रतिरोधक क्षमता बढ़ती है जिसका अंतिम फल आयु का बढ़ना होता है । शांत चित के बिगैर स्वास्थ् नहीं मिल सकता । ये ऐसा है जैसे - पेट्रोल-पंप पर जाकर गाड़ी का इंजिन बंद करना पड़ता है ताकि फ्यूल रिफिल हो सके । ऐसे ही आपको चित शांत करना पड़ता है ताकि न्यूरॉन्स की संख्या बढ़ सके ।

BHAGYADISHA.COM

दरअसल ज्योतिष, भौतिक जगत से एक कदम आगे जाकर चीजों को देखता है । इसको हम फोर्थ डाइमेंशन यानी चौथा आयाम नहीं कह सकते क्योंकि उसको सूक्ष्म-जगत कहते हैं जहाँ शरीर नहीं होता । अर्थात कुछ भी सॉलिड नहीं होता । लेकिन इसको हम थ्री डायमेशनल वर्ल्ड भी नहीं कह सकते क्योंकि यहाँ सबकुछ लॉजिकल है और ज्योतिष में ऐसा नहीं है । थ्री डायमेंशन्स में रहकर ज्योतिष फोर्थ डाइमेंशन को देखता है और आवश्यकतानुसार इसे इंसान से जोड़ता है । तभी इसे वेद का नेत्र कहा गया है ।

ये सब मैंने धीरे-धीरे निरमा को समझाया और वो मंत्रमुग्ध होकर सुनती रही ।

उस दिन बुधवार था और गुरु का नक्षत्र पूर्वा-भाद्रपद था । दिन बहुत अच्छा था और बुधवार के दिन मैं सब्जी-मार्केट से हरी सब्जी जरूर लाता था । सो उस दिन भी लाया था । हालांकि सरसों का साग नहीं मिला - जोकि मुझे चाहिये था । तो मैं चने का साग ही ले आया था । दोपहर में चने का साग, पाँच अनाजों की रोटी, मटर वाले चावल, बूंदी का रायता, तड़के वाली अरहर की दाल और मसालेदार आलू के टूक खाने को मिले । मैं खूब तृप्त होकर ऑफिस आया था और बहुत मूड में था ।

मेरे ऐसे बढ़िया मूड के कारण ही मैं निरमा के सवालों से बोर नहीं हो रहा था और निरंतर उससे बातें कर रहा था । इससे मुझे एक बात समझ में आई कि - आदमी अगर खुद तृप्त हो तो दूसरों को भी तृप्त करने का प्रयास करता है ।

बहरहाल वो और बातें करने वाली थी, लेकिन एक दम्पत्ती मेरे ऑफिस आ गये । ये पहले भी मेरे ऑफिस आ चुके थे, अपने बेटे की कुंडली दिखाने के लिये कि - उसकी शादी कब होगी । उस दिन फिर आये थे बेटे की कुंडली मिलान के लिये ।

उन्हें देखकर निरमा उठ खड़ी हुई और मुझसे हाथ जोड़कर विदा लेने वाले अंदाज़ में बोली - "अच्छा, पंडित अब मुझे इज़ाज़त दीजिये । लेकिन मैं फिर आउंगी । आपसे और भी बहुत कुछ पूछना है" ।

- "हाँ, हाँ । जब चाहो" । मैं बोला ।

फिर वो चली गई । मैं जानता था कि - वो फिर आएगी । लेकिन मुझे आसार कुछ अच्छे नहीं लग रहे थे । जाते-जाते उसने मुझे बड़े संतुष्टिपूर्ण ढंग से देखा था । मानो किसी शिकारी ने अपना शिकार तय कर लिया हो । मुझे बे-चैनी महसूस होने लगी । पता नहीं क्यों मुझे ऐसा लग रहा था कि - वो मुझे उल्लू बनाएगी, मुझे अपना शिकार बनायेगी । अगर मुझे उसकी कुंडली मिल जाती तो फिर मैं भी उसको समझ लेता । लेकिन अब परिदृश्य ये था कि - वो जानती थी कि - मुझमे क्या था । लेकिन मैं नहीं जानता था कि - उसमे क्या था । मैंने कसमसाकर सोचा कि - काश, मुझे उसकी कुंडली मिल जाती ।

फिर मैं उन दंपती की ओर आकर्षित हुआ । उनके बेटे का रिश्ता आया था और लड़की की कुंडली आई थी मिलान के लिये । मैंने कुंडली मिलायी चौबीस गुण मिल रहे थे, भकूट भी मिल रहा था और नाड़ी-दोष भी नहीं था । परंतु लड़की की कुंडली में सप्तमेश का 'षड-अष्टक' योग था जो दर्शा रहा था कि -लड़की की कुंडली में वैवाहिक सुख की कमी थी । उसके दूसरे भाव में राहु विराजमान था जो दर्शा रहा था कि - उसकी वाणी रुक्ष थी और पारिवारिक तालमेल की कमी थी । मैंने उन्हें बताया, वो लोग निराश हो गए । उन लोगों

BHAGYADISHA.COM

ने बताया कि - लड़की बहुत सुन्दर थी, साधन- संपन्न परिवार से थी और सशक्त पृष्ठ-भूमि से थी । फिर उन्हौने बताया कि - लड़की वालों की ओर से कुंडली मिल गई है - उनको ऐसा बताया गया है ।
फिर उन्हौने किसी उपाय की बाबत पूछा लेकिन मैं कोई उपाय नहीं बता पाया और वो लोग चले गये ।
लेकिन व्यवहारिकता की जीत हुई और वो श्रद्धा और विश्वास पर छा गई । कालांतर में वो विवाह हो गया और गिरते-पड़ते लड़खड़ाती चाल से ज़िन्दगी की डगर पर चलने लगा । अब उनके निरंतर उपाय किये जाते है ताकि वे दोनों पति-पत्नी शान्ति से जीवन यापन कर सके । उनके माता-पिता को पता है कि - चूक कहाँ हुई है लेकिन वो उस पर बात नहीं करना चाहते है । हां, गंभीरता का मुखौटा ओढ़े वो उपाय पर उपाय करते रहते हैं और विभिन्न प्रकार के दोषारोपण का दौर चलता रहता है । साथ-साथ नव-दंपती का वैवाहिक जीवन भी वैचारिक मतभेदों से भरा चलता रहता है ।
जीन्दगी की तेज रफ़्तार में, उन्नति की हायतौबा में, दूसरों से आगे निकलने की होड़ में और रिश्तों के बिखराव के दौर में गलती करना बहुत हानिकारक सिद्ध होता है । ऐसे में ज्योतिष एक मज़बूत सहारे के रूप में उभरा है । लोग गलती नहीं करना चाहते, मौका नहीं चूकना चाहते और ज्योतिष उनको निराश नहीं करता । तीव्रता से आधुनिक होते जगत में एक मौका मिले तो लोग कहाँ से कहाँ पहुँच जाते हैं । बाकि लोग तो निरंतर कठोर मेहनत करते रहते है । लेकिन ज्योतिष की नज़र से ऐसे मौके बच नहीं पाते है । ज्योतिष सभी को उनके जीवन में मिलने वाले मौकों के विषय में बता सकता है और यही बात अब सभी लोग समझने लगे है । जिससे निरंतर ज्योतिष की लोकप्रियता बढ़ती जा रही है । लेकिन बहुत से लोग इसके मर्म को अभी तक समझ नहीं पाये हैं । वे अभी भी इसके व्यवहारिक लाभ को ही अपनाते है । इसके आध्यात्मिक और प्राकृतिक पक्ष को वे लोग नज़रअंदाज़ कर देते हैं ।
ऐसे लोगों से मुझे बहुत माथा-पच्ची करनी पड़ती है । इसके लिये मुझे खुद को मानसिक रूप से तैयार रखना पड़ता है । जिसके लिये मैं सुबह-सुबह करीब चार किलोमीटर पैदल चलता हूँ, फिर गार्डन में बैठ कर कपाल-भाति, अनुलोम-विलोम और भ्रामरी जैसे प्राणायाम करता हूँ और अंत में ध्यान करता हूँ । जिससे मुझे ऊर्जा प्राप्त होती है और मैं अपनी काया को निरोगी रख पाता हूँ । स्नान करने के बाद मैं कम से कम एक माला गायत्री जाप अवश्य करता हूँ । जिससे मेरा इष्ट साधन होता है और मैं कुंडली पूछने वालो के सामने स्वयं पर नियंत्रण बनाये रखता हूँ । अन्यथा ये सब आसान ना होता मेरे लिये ।
जैसे बच्चे परीक्षाओं में पास होने की बाबत जानना चाहते है, लेकिन अपनी योग्यता के विषय में नहीं । युवा-वर्ग अपने विवाह के विषय में जानना चाहता है, लेकिन विवाह-सुख के विषय में नहीं । भौतिक जगत में सब धन-लाभ के विषय में जानना चाहते है, लेकिन कर्म-योग के विषय में नहीं । रोगों से जूझने वाले प्राणों के विषय में पूछते है, प्राणायाम के विषय में नहीं । मृत्यु की कगार पर पहुचें लोग मृत्यु के समय की चर्चा करते है, मुक्ति के विषय में नहीं ।
प्रतिदिन ऐसे ही लोगों से मैं संपर्क में रहता हूँ । युवा लड़कियां जब कुंडली दिखाकर विवाह के सम्बन्ध में जानना चाहती हैं तो विवाह को छोड़कर वे दूसरी बातें पूछने लगती हैं - जैसे, जिससे वो प्रेम करती थी, वो दूसरी लड़की से प्रेम करने लगा है, उसे वहां से धोखा मिलेगा यां नहीं ? उसकी शादी पहले होगी यां मेरी

BHAGYADISHA.COM

पहले होगी ? क्या आप कुछ ऐसा कर सकते हैं कि - वो फिरसे मेरे पास आ जाये ? इत्यादि । धन के इच्छुक लोगों को मैं स्वास्थ के सम्बन्ध में बताने का प्रयास करता हूँ लेकिन वो कहते हैं - पंडित-जी, पैसा है तो सबकुछ है । आप ऐसी दशा बताईये जिसमे बहुत धनलाभ हो, मैं अम्बानी बनना चाहता हूँ । आप देखिये मेरी कुंडली ऐसा योग है कि नहीं ? आपने अम्बानी की कुंडली देखी है ? इत्यादि ।

फिर पति-पत्नी के वाद-विवाद । जब मतभेदों से युक्त पति-पत्नी कुंडली दिखाने आते है तो वो चाहते कि - कुंडली देखने के बजाय मैं उनकी बातें सुनु, जो वो एक-दूसरे विषय में शिकायतें करते हैं ।

कुछ ऐसे लोग भी आते है जो अपनी नहीं दूसरों की कुंडली जानना चाहते है । ये लोग पहले मेरी बहुत प्रशंसा करते है और फिर इशारों-इशारों में अपना मंतव्य ज़ाहिर करते है । मैं उन्हें समझाता हूँ कि - दूसरों की कुंडली तुम्हे बतायी तो तुम्हारी कुंडली भी किसी दूसरे को बताई जा सकती है । इससे कुछ लोग समझ जाते हैं और कुछ लोग प्रयास करते रहते हैं ।

इन सबसे अलग बाहुबलियों का अंदाज़ होता है । अभी मैं ये सोच ही रहा था कि मेरे लैंडलाइन के फ़ोन की घंटी बजी । मैंने फ़ोन उठाया तो आवाज आई ।

"पंडत-जी" । कोई गुंजायमान भारी भरकम आवाज में बोला था । ये नगर का बाहुबली नेता बाबू सावंत था ।

वो बोला - "पंडत-जी, बहुत दिन हुआ, तुम्हारा दर्शन मांगता है बाबा" ।

मैं सहमी आवाज में बोला - "जी, श्रीमान" ।

उसने सुना-अनसुना किया और आगे बोला - "मेरा दो दोस्त लोग आया है, उनका कुंडली देखने का है । मैं बोला वो लोग को कि - अपना पंडत अच्छा कुंडली देखता है" ।

वो एक पल को रुका फिर बोला - "कल टिटवाला गया था, गणपती बाप्पा का दर्शन के लिये । तुम्हारे लिये प्रसाद और नारियल लाया है । घरवाली बोली कि - पंडत आयेगा तो देगी । आने का, प्रसाद लेके जाने का बाबा । दोस्त लोग का कुंडली भी देखने का, दो बजे गाडी भेजेगा" ।

फिर फोन कट गया । उसने मेरी हाँ यां ना सुनी ही नहीं । मैं ऐसे ही डिसकनेक्ट हो गये फोन में बोला - "जी-श्रीमान" । और बेवकूफों की तरह फोन को घूरने लगा, मानो फोन ही कुछ बोलने वाला था ।

करीब दो साल पहले बाबू सावंत जेल में था जब उसके किसी शुभचिंतक ने मेरी उससे फोन पर बात करवाई थी । उसने सीधे ही पूछा था कि - जेल से कब निकलूंगा ।

मैंने उसकी कुंडली से द्वादश भाव के शत्रु ग्रह की दशा और गोचर में द्वादश भाव के शत्रु की बलवान स्तिथि का आंकलन किया और उसे बताया । मेरे बताये समय के अनुसार वो जेल से छूट गया था । जिसके बाद अब अक्सर वो मुझे बुलाता रहता है ।

उस दिन भी उसने दो बजे मुझे बुलाया था । दो बजे उसका ड्राईवर मारुती 1000 लेकर आया और मुझे उसके घर की तरफ ले चला ।

रास्ते में मैं उसी के विषय में सोचता रहा ।

BHAGYADISHA.COM

बाबू सावंत का इतिहास बड़ा रक्तरंजीत रहा था । कितनी ही हत्याओं के लिये वो जिम्मेदार था । कितने ही पुलिस केस उस पर चल रहे थे । नगर के इतिहास में छिड़ी 'हॉलिडे-गैंगवार' का वो सूत्रधार था ।

ऐसा कहा जाता है कि बहुत पहले उसने अपना जीवन अवैध शराब बेचने से शुरू किया था । फिर उसने कई और अवैध धंधे सीखे और गैर-कानूनी पेशे को गहराइ तक समझा । कालान्तर में उसने अपने बॉस से ही बग़ावत कर दी और अपना अलग गैंग बना लिया ।

आने वाले वर्षों में उसने अपना बहुत बड़ा अवैध साम्राज्य खड़ा किया । फिर नगर में उसका एकछत्र राज्य कायम हो गया और वो दहशत का पर्याय बन गया था ।

फिर एक भूखंड की वजह से मची मार-कुटाई ने नगर में भूचाल ला दिया । नगर के गणमान्य लोग, उद्योगपति, राजनितिक और रसूख वाले लोग इस भूखंड की वजह से गुटों में विभाजित हो गये । इस आग में घी का काम किया म्युनिसिपल कारपोरेशन के चुनावों ने, चुनावों की घोषणा के साथ ही नगर बारूद का ढेर बन गया । अब मेयर के पद को हासिल करने के लिये सीधे-सीधे दो गुट बन गये ।

मेयर का पद किसी भी गुट को मिलता, दूसरा गुट तो नाराज़ होना ही था । राजनितिक धोखाधड़ी और कूटनीतिक असफलता ने असंतोष को भड़काया । मेयर का पद बाबू सावंत के समर्थक गुट को नहीं मिला और भयंकर गैंगवार छिड़ गई ।

दिनदहाड़े, सरेआम और बीच बाजार एक गणमान्य व्यक्ति की हत्या कर दी गई । सब कहते है इसको बाबू सावंत ने करवाया था । नगर के बीचोंबीच जिस बाजार में ये हत्या हुई वो बाजार मंगलवार को बंद रहता था । जिस दिन हत्या हुई उस दिन भी मंगलवार ही था । इसके बाद आने वाले प्रत्येक मंगलवार को हत्यायें होने वाली थी । जिससे नगर के इतिहास की कुख्यात 'हॉलिडे-गैंगवार' आरम्भ हो गई ।

बहुत बाद में मैंने नगर की कुंडली का भी अध्ययन किया और बहुत चौकानें वाले तथ्य मुझे मिले ।

BHAGYADISHA.COM

सुरेश भारद्वाज - उल्हासनगर, मुम्बई
www.bhagyadisha.com